## Padma Bhushan



# Smt. Sudha Ragunathan

Smt. Sudha Ragunathan is one of India's leading Carnatic vocalists. She is a Top Grade artiste of the Prasar Bharati and the Doordarshan. She has evolved a style of her own where the soul of her music lies in the dynamism of presentation. As a cultural ambassador, she has toured the globe, performing, teaching and spreading India's rich musical heritage.

2. Born on 30th April, 1958, Smt. Sudha is a postgraduate in Economics. She created history in her college by winning 'The Outstanding Student of the College' Award for three consecutive years. Her gurukulam with Dr. M.L. Vasanthakumari and the Central Government Scholarship for advanced training in music received in 1977 were a turning point in her life.

3. Smt. Sudha's music is universally appealing and has participated in several global music festivals. She has the distinction of performing with groups like the 'Rhythm de la Parole,' Paris, France and the Global Vocal Meeting (organized by the Burghof, an Academy of Music and Arts at Lorrach, Germany). Singing in the presence of the King and Queen of Norway and at exotic and deeply cultural venues in Switzerland, Tunis, Israel and France (Les Voix de Silvacane) and Belgium (Brussels, Lille and at Liege) along with musicians from across the globe has helped her forge her presence in representing the rich music of our country.

4. Apart from concert singing, Smt. Ragunathan has conducted numerous workshops for aspiring students of music at London, the USA, Malaysia, Singapore and Melbourne and is known for her versatility in conducting lecture-demonstrations. She was chosen to render the Vande Mataram at the Central Hall of Parliament when the nation celebrated the 50th year of Republic India. Her performance at the Alice Tully Hall, Lincoln Centre at New York Broadway to commemorate 50 years of the Bharatiya Vidya Bhavan and at the Theatre de a Ville in Paris are still being spoken about. Her foray into film music saw her winning the Southern Indian Cinematographers Association Award for her very first film song. She is also into composing music for two Tamil films.

5. Smt. Ragunathan's urge to serve the society led to the launch of Samudhaaya Foundation in 1999. It has offered medical and infrastructural support to mentally challenged, destitute, and deaf and blind children and towards palliative care. Under the aegis of the Foundation, she has taken carnatic music to the corporation schools and old age homes in Chennai. This has been commended by India's former President Dr. A.P.J. Abdul Kalam. She has given exclusive concerts for the male and female inmates of the Puzhal Prison in Chennai on separate occasions and this has left an indelible mark both on her career and in the hearts of her unique audience.

6. Smt. Ragunathan has more than two hundred awards and titles to her credit. To mention a few, she has received the 'Padma Sri' in 2004, 'Kalaimamani', 'Sangeetha Choodamani', 'Sangeetha Saraswathi', 'Sangeetha Vishaaradh', 'Sangeetha Sampoorna', Bharath Jyothi and the 'Sangita Kalanidhi' (instituted by the renowned Music Academy, Chennai in 2013) along with a noteworthy list of Lifetime Achievement Awards from important institutions across the globe. Smt. Ragunathan has been a key participant for over three decades at the annual Thyagaraja Aradhana held at Tiruvaiyaru, Tamilnadu, in memory of Saint Thyagaraja, one among the Trinity Composers in Carnatic Music.



# श्रीमती सुधा रघुनाथन्

श्रीमती सुधा रघुनाथन् कर्नाटक संगीत में भारत की अग्रणी गायिकाओं में से हैं। आप प्रसार भारती और दूरदर्शन की शीर्ष श्रेणी की कलाकार हैं। आपने अपनी अलग शैली विकसित की जहां आपके संगीत का भाव इसके प्रस्तुतीकरण में निहित है। सांस्कृतिक राजदूत के रूप में आपने सारे विश्व का भ्रमण किया, जहां आपने भारत की समृद्ध संगीतमय विरासत प्रदर्शित की, अध्यापन किया और उसका प्रसार किया।

2. आपका जन्म अप्रैल 30, 1958 को हुआ। आप अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर हैं। आपने अपने कॉलिज में लगातार तीन वर्ष तक "कॉलिज का उत्कृष्ट विद्यार्थी" का पुरस्कार जीत कर इतिहास रचा। डॉ. एम.एल. वसंतकुमारी के साथ आपका गुरुकुलम संगीत में उच्च प्रशिक्षण के लिए 1977 में प्राप्त केन्द्रीय सरकार स्कॉलरशिप, आपके जीवन के संक्रांति काल थे।

3. आपका संगीत स्वत: आकर्षित करने वाला है और आपने विश्व के कई संगीत समारोहों में भाग लिया है। आपको 'रिद्म डे ला पैरोले, पेरिस, फ्रांस और ग्लोबल वोकल मीटिंग (बर्गाफ, संगीत और कला अकादमी, लोरचि, जर्मनी द्वारा आयोजित) जैसे ग्रुप के साथ अपनी कला का प्रदर्शन करने की विशिष्टता प्राप्त है। सारे विश्व के संगीतज्ञों के साथ नार्वे के राजा और रानी की उपस्थिति तथा स्विटजरलैंड, ट्यूनिश, इजराइल और फ्रांस (लेस वोइक्स डि सिल्वाकेन) और बेल्जियम (ब्रुसेल्स, लिली और लिएग) में आकर्षक और प्रसिद्ध सांस्कृतिक स्थलों में गायन कार्यक्रम के माध्यम से अपने देश के समृद्ध संगीत को प्रस्तुत करने में अपनी उपस्थिति का एहसास दिलाने में मदद की।

4. संगीत समारोहों में गायकी प्रस्तुत करने के अलावा, आपने लंदन, यू एस ए, मलेशिया, सिंगापुर और मेलबर्न में संगीत के भावी विद्यार्थियों के लिए कई कार्यशालाएं आयोजित कीं। व्याख्यान-संगीत कला प्रदर्शित करने में आपको बहुमुखी प्रतिभा की धनी माना जाता है। जब हमारे देश ने भारत गणराज्य की 50वीं वर्षगांठ मनाई तो संसद के सेंट्रल हॉल में वंदे मातरम् गान के लिए आपका चयन किया गया। भारतीय विद्या भवन की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर एलिस तुली हॉल, लिंकन सेंटर, न्यूयार्क ब्रोडवे और थिएटर डि अ विले पेरिस में आपके गायन को आज भी याद किया जाता है। जब आपने फिल्मों में संगीत दिया तो आपको अपने पहले ही फिल्मी गाने के लिए दक्षिण आपको भारतीय सिनेमाटोग्राफर्स एसोसिएशन पुरस्कार प्राप्त हुआ। आप दो तमिल फिल्मों में भी संगीत दे रही हैं।

5. समाज सेवा करने की अपनी ललक के कारण आपने सन् 1999 में समुदाय प्रतिष्ठान की स्थापना की। इस प्रतिष्ठान ने मानसिक रूप से विकलांग लोगों, दीन-हीन लोगों, और मूक-वधिर बच्चों को चिकित्सा और अवसंरचनात्मक सहायता तथा प्राथमिक उपचार प्रदान किया। प्रतिष्ठान के तत्वावधान में आपने चेन्नई के निगम विद्यालयों और वृद्धाश्रमों में कर्नाटक संगीत पहुंचाया। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम ने आपकी प्रशंसा की। आपने अलग-अलग अवसरों पर चेन्नई स्थित पुझल कारागार के महिला और पुरुष कैदियों के लिए विशेष संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया और इसने आपके कॅरिअॅर और आपके विशिष्ट श्रोताओं के दिलों पर अमिट छाप छोड़ दी।

6. आपको दो सौ से अधिक पुरस्कार और उपाधियां प्राप्त हुई हैं। इनमें सन् 2004 में 'पद्म श्री', 'कलाइमामणि', 'संगीत चूड़ामणि', 'संगीत सरस्वती', 'संगीत विशारद', 'संगीत संपूर्ण', 'भारत ज्योति' और 'संगीत कलानिधि' (सन् 2013 में सुप्रसिद्ध संगीत अकादमी, चेन्नई द्वारा स्थापित) के साथ-साथ सारे विश्व के महत्वपूर्ण संस्थानों से लाइफटाइम अॅचीवमेंट पुरस्कारों की लंबी सूची शामिल है। संत त्यागराज जो कर्नाटक संगीत के त्रयी संगीतज्ञों में से हैं की स्मृति में तिरुवयूर, तमिलनाडु में आयोजित होने वाले वार्षिक त्यागराज आराधना में आप तीन से अधिक दशकों से भाग ले रही हैं।